हिंदी दलित साहित्य का माइल स्टोन : डॉ. एन. सिंह और उनकी रचनाधर्मिता

डॉ. विरल पटेल

दलित शब्द सुनते ही कई शब्द हमारे मन में तेजी से दौड़ लगाना शुरू कर देते हैं, जैसे शुद्र, अन्त्यज, हरिजन, अस्पृश्य आदि। गांधीजी द्वारा दिये गए हरिजन शब्द पर अम्बेडकर ने आपत्ति जताई क्योंकि द.भारत में देवदासियों से उत्पन्न अवैध सन्तानों को 'हरिजन' कहा जाता है। इस बात से अंदाजा लगा सकते हैं कि यह कितना घृणित शब्द है। "दलित का शाब्दिक अर्थ है कुचला हुआ। अतः दलित वर्ग का सामाजिक सन्दर्भों में अर्थ होगा वह जाति, समुदाय जो अन्यायपूर्ण सवर्णों या उच्च जातियों द्वारा दमित किया गया हो, रौंदा गया हो।"[1]

रौंदे हुए कुचले हुए दमित लोगों का साहित्य ही दलित साहित्य है जो दलितों का उद्घोष है। उनके उत्पीड़ित मन में छुपी ज्वाला है। श्री प्रेम कुमार मणि जी के शब्दों में "दलितों के लिए,दलितों के द्वारा लिखा जा रहा साहित्य दलित साहित्य है, यह विलास का नहीं आवश्यकता का साहित्य है।"[2]

1 जनवरी1956 को सहारनपुर जनपद (उ.प्र.) के चतरसाली गांव में जन्में डॉ.एन.सिंह ने हिंदी साहित्य के विस्तृत धरातल पर दलित साहित्य के लिए जगह तलाशने का सफल कार्य किया। पत्रकारिता से साहित्यिक जीवन की शुरुआत करने वाले डॉ. सिंह निरन्तर सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार करते रहे। लगभग 10 वर्षों तक जालन्धर से प्रकाशित दैनिक 'वीर प्रताप' के सहारनपुर के संवाददाता रहे। "अभाव और उनसे उपजी बाधाएं डॉ. एन.सिंह की कमजोरियां न बनकर उनके लिए प्रेरणाएं ही बन रही है और उन्होंने ही डॉ.एन. सिंह को विद्रोही साहित्यकार बनाया है।"[3]

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी डॉ.एन.सिंह प्राध्यापक है, कवि, समीक्षक है और इन सबसे बढ़कर वे सामाजिक कार्यकर्ता है। इन्होंने ही दलित साहित्य को आंदोलन का रूप दिया। इनकी लोकप्रियता को लेकर श्रीमती रमणिका गुप्ता लिखती है कि "मैं पहली बार दलित मंच पर दलित लेखकों के रूबरू हुई थी। लेकिन जिस बेचैनी से वहाँ एकत्रित लोग डॉ. एन. सिंह की प्रतीक्षा करते देखे गए, वह उनके प्रति विश्वास की भावना को पुष्ट करता है।"[4]

डॉ. एन. सिंह संघर्षशील एवं उदार व्यक्तित्व वाले व्यक्ति है। सहज,सरल और दलित साहित्य के प्रति समर्पित रहते हुए भी कभी कटु नहीं बन पाए, वे अपने प्रगति-पथ पर बढ़ते रहे। "वह जो सोचते है वही लिखते है,और जो लिखते है वही करते है। कलम उनको निकट हृदय को हृदय से जोड़ने वाला मन्त्र है और कविता काल और सत्य को अभिव्यक्त करने वाली शाश्वत ऋचा।"[5]

कविताओं से साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ करने वाले डॉ.एन.सिंह अपनी कविताओं को मंच पर पढ़ा करते थे, लेकिन अपनी विशिष्ट पहचान बनाने के लिए सर्वप्रथम सहारनपुर के युवा कवियों की कविताओं का संकलन '**सम्पुट**'

प्रकाशित किया। 'प्रणय और परिणाम' एवं 'अपना नेता' उनकी प्रथम कविताएं थी जो साप्ताहिक में सन 1974 में प्रकाशित हुई। इसमें एक युवा वर्ग के प्रेम और श्रृंगार से सम्बंधित उद्गारों के साथ सामाजिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह का भी समावेश था। "सम्पुट का संपादन एक युवक के कुछ कर गुजरने की अदम्य चाह थी।"[6] उनकी यह पहली पुस्तक थी जिसका प्रकाशन 1980 में हुआ था।

सन 1979 से 1988 तक लिखी गयी लगभग 60 कविताओं का संकलन है 'सतह से उठते हुए' काव्य संग्रह। इनमें 23 मुक्त छंद, तीन गीत तथा 34 गजलें शामिल है। उनका यह प्रथम संग्रह भी पर्याप्त चर्चा का विषय रहा है। डॉ. हरिमोहन के शब्दों में "स्वतंत्रता के बाद सार्वजनिक जीवन में व्याप्त हुई निराशा और बेकारी के व्यूह को कवि ने कई कविताओं में वाणी दी है।....इन कविताओं में आग है, कुछ कर गुजरने की"।7 काव्य-संकलन होते हुए भी यह प्रौढ़ रचनाओं से युक्त है। इस पर संडे ऑब्जर्वर(साप्ताहिक,नई दिल्ली) में देवेन्द्र नैथानी तथा दैनिक ट्रब्यून में प्रो.फूलचंद मानव ने महत्वपूर्ण टिप्पणियां की है। एन. सिंह की कविताओं का कुछ अंश इस प्रकार है-

इस धरती पर कोई नींव खोदने से पहले
कब्र खोदना उस व्यवस्था की
जिसके संविधान में लिखा है
तेरा अधिकार सिर्फ कर्म में है।
श्रम में है
फल पर तेरा अधिकार नहीं।"[8]

'मेरा दलित चिंतन' कृति एक दलित चिंतक और साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित डॉ. सिंह ने पिछले 20 वर्षों में जो कुछ लिखा वह सब उनकी इस कृति में संकलित हैं। जिसमें दलित जागरण क्यों?, वर्ण व्यवस्था में दलित,दलित काव्य में नारी ...जैसे 14 ज्वलंत लेख और 3 साक्षात्कार संकलित है। इनकी इस कृति पर इन्हें म.प्र. दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रवर्तित पुरस्कार योजनान्तर्गत उत्कृष्ट कृति के रूप में चयन किये जाने पर दलित साहित्य अकादमी पुरस्कार 1999 प्रदान किया गया है। "दलित जागरण क्यों? यह एक उत्तेजक सामग्री है। उस लेख में लोकमत और समाचार और न्याय चक्र से साभार लिया गया है। राष्ट्रीय स्वयं सेवकों के एक 24 सूत्रीय प्रपत्र प्रकाशित कराया ।"[9]

'विचार यात्रा' में इनके साहित्यिक सरोकारों से संबंधित लेख है। इस कृति को पढ़ने से लगता है कि वे श्रेष्ठ समालोचक भी है। इस कृति पर उन्हें उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ का आलोचना के लिए दिया जाने वाला 'सर्जना पुरस्कार'1998 प्रदान किया गया है। इस पुस्तक में उनके एक दर्जन लेख शामिल है जिसमें धूमिल,दुष्यंत कुमार,हरिशंकर परसाई,रैदास आदि की रचनाओं की व्याख्या की हैं। इस पुस्तक के निबन्धों का अध्ययन करने के बाद डॉ.कृष्णचन्द्र गुप्त लिखते है कि ".....लेखक का चिंतन फलक अनेक सामयिक महत्व की प्रवृत्तियों तक है। कुल मिलाकर इन निबंधों से लेखक की सन्तुलित विचारक, सहृदय,पारखी और व्यापक तथा गहन अध्येता की छवि पाठक के मन पर अंकित होती है।"[10]

डॉ. एन. सिंह के प्रारंभिक दौर में लिखे गए 23 लेखों का संग्रह है **विचार और विमर्श**। वे स्वयं कहते हैं कि "मेरे यह आलेख उन दिनों लिखे गए थे, जब मैं लिखना सिख रहा था।.....मैं यह समझने का प्रयास कर रहा था कि साहित्य क्या है और साहित्यकार सृजन कैसे करता है।"11 इन लेखों में कुछ साहित्यिक व्यक्तियों के जीवन और कृतित्व से सम्बंधित है और कुछ साहित्य विमर्श से सम्बंधित।

ये सारे लेख दर्शाते हैं कि लेखक की वैचारिक विकास यात्रा का आरम्भ एक अलग ही दिशा में हो रहा था जिसका पड़ाव दलित-साहित्य था।

'संत कवि रैदास:मूल्यांकन और प्रदेय' भक्तिकाल के प्रसिद्ध कवि रैदास और उनके साहिय को केन्द्र में रखकर रची गई आलोचक के रूप में उनकी पहली कृति है। जिससे उन्हें हिंदी साहित्य में आलोचक के रूप में स्थापित किया है। "हालांकि यह एक छोटी पुस्तिका है, लेकिन गागर में सागर भर दिया है।"[12] तीन खंडों में विभाजित इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में रैदास के जीवन वृत्त को द्वितीय खण्ड में मूल्यांकन, तृतीय खंड में प्रदेय जिसमें रैदास की 228 साखियों तथा 100 पदों का संकलन है कुल मिलाकर हम कह सकते है अगर रैदास का सम्पूर्ण अध्ययन करना हो तो यह पुस्तक वह ज्ञान -सागर है जहां हर बूँद रैदासमय है। कहीं और गोता लगाने की जरूरत ही नहीं होगी।

'रैदास ग्रंथावली' डॉ.एन.सिंह के लगभग 20 वर्षों तक सार्थक परिणाम है। 11 अध्याय वाले इस ग्रंथ के वाणी संग्रह में 227 साखी तथा 177 पद और प्रह्लाद चरित का मूल पाठ दिया है। परिशिष्ट में उन्होंने अनन्त वैष्णव की रैदास परिचई भक्त सेन की रैदास कबीर गोष्ठी तथा संत कर्मदास की रैदास महिमा कृतियों को संकलित किया है। "संत रैदास एक अनगढ़ हीरे के समान है, जिन्हें तराशकर पारखियों के सम्मुख लाने में डॉ.एन. सिंह को काफी सफलता प्राप्त हुई है। इस दृष्टि से रैदास ग्रंथावली एक सफल कृति है।"[13] रैदास को पढ़ने के लिए सुधि पाठकों को कहीं और जाने की जरूरत नहीं यह एक कृति ही काफी है।

हिंदी साहित्य में तुलनात्मक आलोचना के प्रदाता आचार्य पद्म सिंह शर्मा द्विवेदी युग के प्रमुख आलोचक हैं उन्हें हिंदी का सर्वश्रेष्ठ 'पत्र लेखक' भी माना जाता है। **'आचार्य पद्मसिंह शर्मा और हिंदी आलोचना'** ग्रंथ उनके शोध-प्रबंध 'आचार्य पद्मसिंह शर्मा:व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रकाशित रूप है जिसे 10 अध्यायों में विभाजित किया गया है। यह ग्रंथ उनके एक गम्भीर शोध-विश्लेषक रूप को सामने लाता है।

'कठौती में गंगा' डॉ. एन.सिंह द्वारा लिखा गया नाटक है जिसे टी. वी. सीरियल की स्क्रिप्ट के रूप में लिखा गया था। यह टी. वी. सीरियल तो नहीं बन सका मगर इसे काफी लोकप्रियता मिली। 13 खण्डों में विभाजित यह नाटक रैदास के सार्थक और सात्विक जीवन पर ध्यान आकृष्ट करने वाली कृति है जो हमें अपनी आस्था और विश्वास के लिए हर परिस्थिति से जूझने और हर कष्ट को सहन करने की क्षमता देती है।

हिंदी दलित कविता का पहला समवेत संकलन डॉ.एन. सिंह द्वारा संपादित **'दर्द के दस्तावेज'** के आने के बाद ही हिंदी साहित्य में दलित कविता की चर्चा प्रारम्भ हुई। इस संदर्भ में डॉ.चरण सिंह वर्मा कहते है कि "अज्ञेय ने जिस प्रकार तार सप्तक कर हिंदी को नई कविता से परिचित कराया था, ठीक उसी प्रकार डॉ.एन. सिंह ने भी दर्द के दस्तावेज का सम्पादन कर हिंदी को दलित कविता से परिचित करवाया है।"[14] इस पुस्तक की भूमिका में डॉ. एन.सिंह लिखते है कि मुझे बार-बार लगता है कि ये दलित कवि आज जो दर्द के दस्तावेज लिख रहे हैं वे निश्चय ही इस वर्ग के लोगों के लिए एक दिन मशाल बनेंगे, जिसकी रोशनी में ये लोग अपना लक्ष्य स्पष्ट होता देख सकेंगे। कुल मिलाकर यह हिंदी दलित साहित्य की नींव का वह पत्थर है जिस पर दलित साहित्य की मजबूत इमारत खड़ी होनी है हिंदी दलित साहित्य के इतिहास में इसका महत्वपूर्ण स्थान हैं।

'चेतना के स्वर' में 12 दलित कवियों की चुनिंदा कविताएं संकलित है। जिनका साहित्यिक परिचय स्वयं डॉ.एन.सिंह ने लिखा है। इस संकलन की भूमिका 'हिंदी दलित कविता' में वे कहते है कि कवि दो प्रकार के होते हैं। एक जो एअर कंडीशन कमरों में बैठकर काव्य सृजन करते है और दूसरे वे रचनाकार जो गांव और छोटे बड़े कस्बों में रहकर आम आदमी की सारी दिक्कतों को झेलते हुए समय मिलते ही अपनी लहूलुहान चेतना को अभिव्यक्ति का रूप देते हैं। इन्हीं रचनाकारों की रचनाओं को हिंदी में दलित कविता के नाम से जाना जाता है। "तेलुगु के मेनीफेस्टो कविता संग्रह जैसा ही एक और कविता संग्रह अब हिंदी में आया है-चेतना के स्वर शीर्षक से।"[15] यह ग्रंथ हिंदी दलित कविता का आधार ग्रंथ है।

जब हिंदी दलित कहानी आने की शुरुआती दौर में थी उस समय डॉ.सिंह ने **'काले हाशिये पर'** कहानी संकलन का सम्पादन किया इसमें दलित कहानीकार एवं गैर दलित कहानीकारों की दलित चेतना सम्पन्न कहानियों को स्थान दिया गया है। कुछ मराठी कहानीकारों की रचनाओं के हिंदी अनुवाद भी रखे गए हैं। इससे हिंदी कथा-लेखन को प्रौढ़ता प्राप्त होगी। इस संकलन में कथा सम्राट प्रेमचन्द की कहानी 'ठाकुर का कुआँ' को भी शामिल किया गया है। डॉ. एन. सिंह के शब्दों में "दलित चेतना की कथाओं के रूप में सूर्य कांत त्रिपाठी निराला, प्रेमचन्द, शिवप्रसाद सिंह आदि ने एक पृष्ठभूमि प्रदान की और उस पर जिन दलित कथाकारों ने दलित कथा के सृजन का प्रयास किया, उनमें श्री ओम प्रकाश वाल्मीकि, पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, मोहनदास नैमिशराय..... आदि के नाम उल्लेखनीय है।....इन कथाकारों की कहानियां परम्परा के विरोध की कहानियां है जो प्रचलित परम्परा से पहले संघर्ष और अंततः उसे अस्वीकार कर देती है।"[16] कुल मिलाकर कह सकते है कि काले हाशिये पर डॉ. एन.सिंह द्वारा निर्मित ऐसा फलक है जिसमें चेतना के स्वर सामूहिक रूप से प्रकट हो रहे थे।

हिंदी दलित साहित्य विधा दर विधा आगे बढ़ता जा रहा था अब सवाल था उसे पाठ्यक्रम में शामिल करने का। ऐसा लगता है कि **'यातना की परछाईयाँ'** का सम्पादन डॉ.एन.सिंह ने महाविद्यालय के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए ही किया हो। इसमें केवल दलित साहित्यकारों की कहानियों को ही स्थान दिया गया है। श्रीमती राजकुमारी 'राजा' का कहना है कि "समग्र रूप से कहा जा सकता है कि 'यातना की परछाईयाँ' कथा संग्रह दलित जीवन के किसी न किसी उत्पीड़न को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। इन कहानियों में कहीं भी भाषा और शिल्प में खोट नहीं है।"[17]

डॉ.एन.सिंह द्वारा संपादित **'दलित साहित्य चिंतन के विविध आयाम'** ग्रंथ प्रगतिशील जनवादियों, आभिजात्य वर्ग के साहित्यकारों के अनेक सवालों का जवाब ही नहीं देता अपितु समस्या का विवेचन भी करता है। इस पुस्तक में कुल मिलाकर 12 लेख सम्मिलित हैं। डॉ.शिवचन्द्र प्रसाद लिखते है कि "..... दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र को भी बड़ी बारीकी एवं सरलता,स्पष्टता सहित पाठक के मानस पटल पर रखते हैं।"[18]

'शिखर की ओर' हिंदी दलित साहित्य के लेखक एवं कवि श्री माताप्रसाद जो अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल थे का अभिनंदन ग्रन्थ है। जो व्यक्ति निर्बाध रूप से साहित्य-सेवा में लगा रहा हो उसका अभिनंदन होना ही चाहिए। इस ग्रंथ का सम्पादन डॉ.सिंह की सूझ बूझ भरी कार्यनीति का हिस्सा है। उनका मानना था "जब मौका मिले, अपने विचार रखो, अलग-थलग मत पड़ो,....अपनी पहचान बनाए रखो।"[19] इस ग्रन्थ के चार खण्ड है जिसमें अंतिम खंड 'चेतना' में दलित साहित्य के विचार पर हैं जिसमें डेढ़ दर्जन लेखकों के लेख है जो उस ग्रन्थ के रूप में लगभग तत्कालीन हर बड़े नेता तक पहुंचे, जिससे दलित साहित्य आंदोलन का विस्तार हुआ। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खंड में माताप्रसाद के व्यक्तित्व, सृजन एवं मूल्यांकन को प्रस्तुत किया गया है।

दलित साहित्य में हो रहे नित नए परिवर्तनों को पाठकों तक पहुंचाने के लिए आंदोलन धर्मी डॉ.एन.सिंह ने **'दलित-साहित्य और युग-बोध'** का सम्पादन किया है। इसकी भूमिका में उन्होंने लिखा कि "अब दलित की लड़ाई दलित नेतृत्व में ही लड़ी जाएगी, साहित्य में भी और समाज में भी।"[20] इस पुस्तक के सभी लेख विचारों को उत्तेजित करने वाले हैं जो कि दलित आंदोलन को सुदृढ़ करने और उसे दिशा देने में सक्षम हैं।

डॉ. एन. सिंह न केवल हिंदी भाषी क्षेत्रों में लोकप्रिय थे अपितु अहिन्दी क्षेत्रों में भी लोकप्रिय थे। उनकी कई रचनाओं का अनुवाद भारत की अन्य भाषाओं जैसे असमिया,गुजराती,मराठी,उर्दू,पंजाबी, तेलुगु में भी लेखकों द्वारा किया गया जो इस बात की गवाही देता है कि वास्तव में डॉ. एन.सिंह दलित साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर है।

कुल मिलाकर हम कह सकते है कि आंदोलनधर्मी एवं बहुमुखी व्यक्तित्व वाले डॉ. एन.सिंह ने न केवल कविताएं लिखी अपितु वे सम्पादक, आलोचक,नाटककार, विचारक,विश्लेषक भी थे। इन्होंने हिंदी दलित साहित्य को प्रतिष्ठित करने

में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इतना ही नहीं अपितु इसे पाठ्यक्रम में शामिल करने का महत्वपूर्ण एवं सफल प्रयास किया। "दलित साहित्य को पाठ्यक्रम में शामिल करवाने में डॉ.एन.सिंह की जो श्रम साध्य ऐतिहासिक भूमिका रही है, उसके लिए दलित समाज उनका ऋणी रहेगा।"[20] इसके लिए इन्हें कई पुरस्कारों से नवाजा गया जिसके सही मायने में वे हकदार थे। अगर इन्हें दलित साहित्य का माइल स्टोन कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सन्दर्भ सूची

1. हिंदी उपन्यास में दलित वर्ग – डॉ.कुसुम लता मेघवाल पृ. 1
2. दलित साहित्य एक परिचय (लेख): वर्तमान साहित्य ,मासिक गाजियाबाद सन प्रेम कुमार मणि पृ.48
3. डॉ.एन.सिंह : डॉ. श्याम सुंदर चौहान पृ.4
4. जड़ता को तोड़ता संघर्षशील व्यक्तित्व (भूमिका) हिंदी साहित्य में दलित संघर्ष के उन्नायक :डॉ.एन.सिंह- सं रमणिका गुप्ता पृ.5-6
5. प्रतिभा,संघर्ष और आस्था का संगम डॉ. एन.सिंह(लेख) -डॉ..के.जैन, सृजन(मासिक) मुजफ्फरनगर सित.1983 पृ. 6
6. डॉ.एन.सिंह : डॉ. श्याम सुंदर सिंह पृ.5-6
7. सतह से उठते हुए : डॉ.एन.सिंह के प्रथम फ्लैप पर
8. सतह से उठते हुए : डॉ.एन.सिंह पृ. 11
9. दलित कृतियाँ जो चर्चा मर नहीं (लेख) : डॉ.श्योराज सिंह बैचेन राष्ट्रीय सहारा, दैनिक दिल्ली मार्च 2000 पृ. 14
10. समीक्षा, त्रैमासिक, दिल्ली जन.से मार्च 1998 पृ. 40-45
11. व्यक्ति और विमर्श(भूमिका-मेरी ओर से: डॉ.एन.सिंह
12. नवभारत टाइम्स दैनिक, नई दिल्ली 28जून 1987
13. रैदास ग्रंथावली(भूमिका श्री माताप्रसाद द्वारा): सं.डॉ.एन.सिंह
14. सहारनपुर दर्शन, दैनिक सहारनपुर 7 फर. 1993
15. हिंदी साहित्य में दलित संघर्ष के उन्नायक :डॉ.एन.सिंह- सं रमणिका गुप्ता पृ.138
16. काले हाशिये पर(भूमिका): डॉ.एन.सिंह
17. दलित उत्पीड़न,अनियतकालीन, मसूरी अगस्त1998 पृ.119
18. समीक्षा,त्रैमासिक,पटना जुलाई-सित.1997 पृ.39
19. हिंदी साहित्य में दलित संघर्ष के उन्नायक :डॉ.एन.सिंह- सं रमणिका गुप्ता (भूमिका)
20. दलित ब्राह्मणों उदय दुखद है(लेख): डॉ.श्योराज सिंह बैचेन, राष्ट्रीय सहारा दैनिक

संपर्क :

अहमदाबाद, गुजरात
viralprg21@gmail.com